PATNA WOMEN'S COLLEGE 1940

Philosophy
Explore–Journal of Research
ISSN 2278 – 0297 **(Print)**
ISSN 2278 – 6414 **(Online)**
© Patna Women's College, Patna, India
http://www.patnawomenscollege.in/journal

गीता के निष्काम कर्म की प्रासंगिकता : आधुनिक युग के परिपेक्ष्य में

• श्रेया राज • काजल कुमारी • सुष्मिता कुमारी
• अमिता जायसवाल

Received : November 2016
Accepted : March 2017
Corresponding Author : Ameeta Jaiswal

Abstract : गीता भारतीय दर्शन की आधारशिला है। हिंदु शास्त्रों में गीता का सर्वप्रथम स्थान है। गीता कर्म योग का प्रधाान ग्रंथ कहा गया है। कर्मयोग दो शब्दों के मेल से बना है कर्म और योग। कर्म का अर्थ कर्त्तव्य और योग का अर्थ आत्मा का परमात्मा से मिलन अर्थात् मनुष्य को ऐसा कर्म करना चाहिए जिससे उसका मिलन ईश्वर से हो जाए। वास्तव में कोई भी मनुष्य कर्म के बिना नहीं रह सकता। यदि कर्म न हो तो न समाज शेष रहेगा न ही व्यक्ति। गीता स्वार्थ से रहित कर्मों को करने के लिए प्रेरित करती है। कर्म के लिए गीता में धर्म का पालन आवश्यक माना गया है पर कोई भी कर्म करने के लिए यह स्मरण रखना आवश्यक है कि कर्मों का कर्त्ता मैं नहीं हूँ।

श्रेया राज
B.A. III year, Philosophy (Hons.), Session: 2014-2017,
Patna Women's College, Patna University, Patna,
Bihar, India

काजल कुमारी
B.A. III year, Philosophy (Hons.), Session: 2014-2017,
Patna Women's College, Patna University, Patna,
Bihar, India

सुष्मिता कुमारी
B.A. III year, Philosophy (Hons.), Session: 2014-2017,
Patna Women's College, Patna University, Patna,
Bihar, India

अमिता जायसवाल
Head, Department of Philosophy,
Patna Women's College, Bailey Road,
Patna – 800 001, Bihar, India
E-mail : ajphilpwc@gmail.com

''कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन ।
मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते संङ्गोऽस्त्वकर्मणि ॥
॥ गीता-**2/47**

अर्थात् तेरा कर्म करने में ही अधिकार है, उसके फलों में कभी नहीं। इसलिए तू कर्मों के फल का हेतु न हो तथा तेरी उसमें आसक्ति भी न हो। कर्म फल की आकांक्षा को दूर करना और अकर्म मान्यता से बचाने पर निष्काम कर्मवाद बनता है। अतः निष्काम कर्म से ही संसार की गति बनी रहेगी और विश्व में सुख, शांति और समृद्धि की स्थापना हो सकती है। इसी उद्देश्य के साथ हमने इस शोध कार्य को सम्पन्न किया है।''

Keywords: **निष्काम कर्म, कर्मयोगी, कृतप्रणाश, अकृताभ्युपगम्।**

परिचय :

कर्मवाद का सिद्धांत भारतीय दर्शन का आधारभूत सिद्धांत है। भारतीय विचारधारा से इसे ईश्वरवाद एवं आत्मवाद से भी अधिक महत्त्व प्राप्त हुआ है। कर्मवाद के दो अंग है कर्म क्रिया रूप में और कर्मवाद सिद्धांत रूप में। चार्वाक को छोड़कर भारत के सभी दर्शन चाहे वह वेद-विरोधी हो कर्म के नियम को मान्यता प्रदान करते हैं। ईश्वरवाद को नास्तिक तो नहीं मानते कुछ अग्रणय आस्तिक भी नहीं मानते, परंतु कर्मवाद को सभी मानते हैं। कर्मवाद के सिद्धांत की पृष्ठभूमि में भारतीय दर्शन की यह मान्यता निहित है कि विश्व में एक शाश्वत नैतिक व्यवस्था है। कर्मवाद के अनुसार मनुश्य जो करता है, उसका फल वहीं भोगता है।

कर्मवाद का अर्थ है- ''जैसा हम बोते हैं वैसा ही हम काटते हैं।'' इस नियम के अनुकूल शुभ कर्मों का फल शुभ और अशुभ

कर्मों का फल अशुभ होता है। सुख और दुख क्रमशः शुभ और अशुभ कर्मों के अनिवार्यतः फल माने गये है। इसलिए कुछ विद्वानों ने 'कर्मवाद' को विश्व में निहित व्यवस्था की दार्शनिक व्याख्या कहा है।

19वीं शताब्दी के पाश्चात्य दार्शनिक ब्रैडले ने भी ''मेरा स्थान और उसका कर्त्तव्य'' निर्धारित है जिसे अपनाना अनविार्य है जहाँ कर्त्तव्य है वहाँ अधिकार भी है। जब हम अकर्मण्य नहीं हो सकते तो कर्म को किसी आदर्श के अनुसार करना चाहिए, बिना आदर्श के नहीं। यह आदर्श निष्काम कर्म का है सकाम कर्म का नहीं। निष्काम कर्म के दो अंग हैं- ममता का त्याग और तृष्णा का त्याग। निष्काम का अर्थ कुछ लोग काम्य कर्मों का त्याग समझते हैं। जैसे- स्त्री, पुत्र, धन आदि के लिए यज्ञ, दान, तप आदि काम्य कर्म है। इनका त्याग काम्य कर्म का त्याग है।

अनासक्त कर्म ही बंधन का बाधक एवं मोझ का साधक है। आसक्ति ही बंधन में हेतु है। जिसमें आसक्ति का अभाव है वह पुरूष कर्म करता हुआ भी जल में कमल के पत्ते के समान से लिप्त नहीं होता-

ब्रह्मण्याधाय कर्मणि सङ्गं व्यक्त्वा करोतियः ।

लिप्यते न स पापेन पद्मपत्रमिवाम्भसा ॥

गीता-5/10

अनासक्त हो कर्म करने वाला योगी ही परमात्मा को प्राप्त करता है। यही कर्मयोग का लक्ष्य है। अनासक्त कर्म ही परमात्मा तक पहुँचने का सोपान या मार्ग है। मानव को सर्वदा कर्म करते रहना चाहिये परंतु अनासक्त भाव से। अनासक्त या निष्काम कर्म करने से वह संसार-बंधन को काट डालता है। जन्म और मरण के चक्र को पार कर जाता है तथा परमात्मा से मिल जाता है। अतः निष्काम कर्म के द्वारा मनुष्य को परमात्मा की प्राप्ति हो सकती है। अतः कर्मयोग ईश्वर से मिलने का साधन या मार्ग हैं कर्मयोग का निष्काम कर्म का आचरण मोटल-मार्ग हैं।

निष्काम कर्म योग में प्रवृति और निवृति दो परस्पर विरोधी आदर्शों का समन्वय होता है। प्रवृति का आदर्श कर्म का आदर्श है, और निवृति का आदर्श वैराग्य का आदर्श है। गीता के निष्काम कर्मयोग में ज्ञान, भक्ति एवं कर्म का भी समन्वय होता है। गीता प्रत्येक व्यक्ति से कर्म सम्पादन का आग्रह करती है किन्तु कर्म-फल में आसक्ति का भाव न रखने की बात भी कहती है।

अध्ययन की महत्ता :

आज के युग में निष्काम कर्म अत्यन्त ही महत्त्वपूर्ण है। जर्मन दार्शनिक काण्ट के अनुसार मात्र कर्त्तव्य से किया गया कर्म ही सच्चा नैतिक कर्म होता है। आधुनिक युग में हम पाते हैं कि अधिकांश व्यक्ति केवल अपने स्वार्थ सिद्धि के लिए ही कर्म करता है। उचित-अनुचित कर्म में भी भेद नहीं कर पाते हैं। यही कारण है कि उसने प्रकृति का दोहन कुछ इस प्रकार से किया कि आज इसे स्वयं ग्लोबल वार्मिंग, बाढ़, भूकम्प इत्यादि प्राकृतिक आपदाओं का सामना करना पड़ रहा है। इसी प्रकार अपने निकृष्ट स्वार्थ स्वार्थ की पूर्ति के लिए विश्व में घृणित अपराध किए जा रहे हैं। चारों ओर आतंक, अशांति, भय फैला हुआ है। तकनीकी प्रगति का दुरूपयोग होने के कारण आधुनिक युग में लोग इससे जुड़े कई अपराधों के शिकार हो रहे हैं। फलस्वरूप विश्व की सुख-शांति यहाँ तक कि उसका अस्तित्व खतरे में हैं।

अतः जब तक मनुष्य अपने इस स्वार्थ पूर्ण कर्मों से ऊपर नहीं उठेगा एवं गीता के निष्काम कर्म की अवधारणा को अपने जीवन में नहीं अपनाएगा तब तक हमारा यह विश्व हमारे रहने योग्य नहीं रहेगा। अतः आज के युग में विश्व में सुख-शांति स्थापित करने के लिए गीता के निष्काम कर्म की प्रासंगिकता बहुत महत्त्वपूर्ण है।

उद्देश्य :

हमारे इस शोधकार्य का उद्देश्य है :-

- भारतीय दर्शन में कर्मवाद के सिद्धांत की विवेचना।
- गीता के निष्काम की अवधारणा का स्पष्टीकरण करना।
- आधुनिक युग में कर्म की अवधारणा की विवेचना करना।
- गीता के निष्काम कर्म की आधुनिक युग में प्रासंगिकता।

विधि :

शोध हेतु हमने वर्णात्मक, विश्लेषणात्मक तथा संश्लेषणात्मक विधि को अपनाया है। इस विधि में हमने सर्वप्रथम निष्काम कर्म पर आधारित विभिन्न पुस्तकों का अध्ययन कर गीता की निष्काम कर्म की अवधारणा एवं महत्त्व का निर्धारण किया है। उसके पश्चात् हमने तथ्यों का विश्लेषण किया कि गीता का निष्काम कर्म मनुष्य के लिए कितना लाभदायक है। उसके बाद हमने उपर्युक्त सामग्रियों के अध्ययन के पश्चात् एक समन्वयित चित्र प्रस्तुत किया तथा इन

विचारों को लागू किया ताकि उनका युवाओं पर गहरा प्रभाव पड़ सके।

भारतीय दर्शन में कर्मवाद का सिद्धांत

कर्मवाद का सिद्धांत भारतीय दर्शन का आधारभूत सिद्धांत है। भारतीय विचारधारा में इसे ईश्वरवाद एवं आत्मवाद से भी अधिक महत्त्व प्राप्त हुआ है। भारतीय, दर्शन के सम्प्रदाय कर्मवाद के सिद्धांत में विश्वास करते हैं। कर्मवाद के दो अंग हैं :- कर्म, क्रिया रूप में और कर्मवाद या सिद्धांत रूप में। चार्वाक को छोड़कर भारत के सभी दर्शन चाहे वह वेद-विरोधी हो अथवा वेदानुकूल हो, कर्म के नियम को मान्यता प्रदान करते है। कर्मवाद के अनुसार मनुष्य जो करता है, उसका फल वही भोगता है। कर्म सिद्धांत का अर्थ है ''जैसा हम बोते हैं वैसा ही हम काटते हैं।'' इस नियम के अनुकूल शुभ कर्मों का फल शुभ और अशुभ कर्मों का फल अशुभ होता है। इसके अनुसार 'कृतप्रणाश' अर्थात् किये हुए कर्मों का फल नष्ट नहीं होता है तथा 'अकृताभ्युपगम्' अर्थात् बिना किये हुए कर्मों का फल भी नहीं प्राप्त होते हैं। इस प्रकार कर्म सिद्धांत कारण नियम हैं जो नैतिकता के क्षेत्र में काम करता है। जिस प्रकार भौतिक क्षेत्र में निहित व्यवस्था की व्याख्या 'कारण -नियम' करता है, उसी प्रकार नैतिक क्षेत्र में निहित व्यवस्था की व्याख्या कर्म-सिद्धांत करता है। इसलिए कुछ विद्यमानों ने 'कर्म-सिद्धांत' को विश्व में निहित व्यवस्था की दार्शनिक व्याख्या कहा है। कर्म सिद्धांत में आस्था रखने वाले सभी दार्शनिकों ने माना है कि हमारा वर्त्तमान जीवन अतीत जीवन के कर्मों का फल है तथा भविष्य जीवन वर्त्तमान जीवन में कर्मों का फल होगा। इस दृष्टि से कर्म तीन प्रकार के माने गए हैं :-

1. संचित कर्म
2. प्रारब्ध कर्म
3. संचीयमान कर्म

1. संचित कर्म:- संचित कर्म, उस कर्म को कहते हैं, जो अतीत कर्मों से उत्पन्न होता है, परंतु जिसका फल मिलना अभी शुरू नहीं हुआ है। इस कर्म का संबंध अतीत जीवन से है।

2. प्रारब्ध कर्म:- प्रारब्ध कर्म वह है जिसका फल मिलना अभी शुरू हो गया है। इसका संबंध अतीत जीवन से है।

3. संचीयमान कर्म:- वर्त्तमान जीवन के कर्मों को जिनका फल भविष्य में मिलेगा, जिसे संचीयमान कर्म कहते हैं।

कर्म ये तीन रूप शक्ति संचालन की तीन विधाएँ हैं। इन विधाओं से ही भाग्य निर्माण होता है। भूत, वर्त्तमान और भविष्य का निर्माण इन्हीं विधाओं के अधीन हो यही कर्मवाद है।

गीता के निष्काम कर्म की अवधारणा:

गीता का कर्मयोग निष्काम कर्मयोग है। गीता आदेश कर्म करने के लिए ही है। निष्काम कर्मयोग का अर्थ है कि हम कर्म को सदैव साध्य के रूप में देखें उसे कभी भी साधन के रूप में न ग्रहण करें। हम कर्म तो करें, किंतु कर्म फल में आसक्ति न रखें। **''कर्मयोगी को सुख-दुःख, लाभ-हानि, जय-पराजय, रूप द्वन्द से ऊपर उठकर कर्म करना चाहिए।''** (सिन्हा: 1992:14, 15)

कर्म दो प्रकार के होते हैं- सकाम और निष्काम। हम किसी कामना या इच्छा से प्रेरित होकर ही शारीरिक या मानसिक कर्म करते हैं, यही सकाम कर्म कहा जाता है। उदाहरणार्थ - स्त्री, पुत्र, धन आदि। हम कामना से प्रेरित हो या फलाकांक्षा के वशीभूत होकर कर्म करते हैं तथा उसका शुभ या अशुभ का फल भोगते हैं।

निष्काम कर्म- यह स्वार्थहीन कर्म है। जिसमें फल की कामना निहित नहीं होती है। निष्काम कर्म को ही कर्मयोग कहा जाता है। निष्काम कर्मयोग में प्रवृत्ति और निवृत्ति दो परस्पर विरोधी आदर्श का समन्वय होता है। प्रवृत्ति का आदर्श कर्म का आदर्श है, सुख का आदर्श है। निवृत्ति का आदर्श वैराग्य का आदर्श है जो सभी कर्मों के परित्याग एवं सांसारिक संबंधों से विमुख होने का समर्थक है। गीता के निष्काम कर्म में ज्ञान भक्ति एवं कर्म का भी समन्वय होता है। गीता का मुख्य शिक्षा, निष्काम कर्म-योग का आदेश है।

आधुनिक पाश्चात्य नैतिक दर्शन में प्रसिद्ध दार्शनिक काण्ट ने भी गीता के ही सामान निष्काम कर्मयोग का विवेचन किया है। उनका सिद्धांत कर्त्तव्य के लिए कर्त्तव्य के नाम से जाना जाता है। कांट ने भी इस बात पर बल दिया है कि व्यक्ति को अपने कर्म का संपादन कर्त्तव्य भावना से करना चाहिए स्वार्थ या सक्षम प्रवृत्ति से प्रेरित होकर नहीं। किंतु गीता का निष्काम कर्मयोग काण्ट के कर्त्तव्य के लिए कर्त्तव्य सिद्धांत से उच्चतर है।

निष्काम कर्मयोग में प्रवृत्ति और निवृत्ति दो परस्पर विरोधी आदर्शों का समन्वय होता है। प्रवृत्ति का आदर्श कर्म का आदर्श है, सुख का आदर्श है इससे प्रेरित व्यक्ति समाज में रहते हुए सुख प्राप्ति हेतु कर्म करते हैं। निवृत्ति का आदर्श वैराग्य का आदर्श है, जो सभी कर्मों के परित्याग एवं सांसारिक संबंधों से विमुख होने का समर्थक है। यह तपस्यामय जीवन और त्याग के निषेधात्मक आदर्श का समर्थक है।

गीता के निष्काम कर्मयोग में ज्ञान, भक्ति एवं कर्म का भी समन्वय होता है। गीता प्रत्येक व्यक्ति से अपने कर्त्तव्य कर्मों के सामाजिक कर्त्तव्यों के स्वधर्म के सम्पादन का आग्रह करती है। इसीलिए यह अकर्मण्यता का विरोध करती है। वह सफलता और असफलता सुख और दु:ख, जय और पराजय, लाभ और हानि, इन निम्नतर प्रवृतियों पर विजय प्राप्त करने का आदेश देती है।

गीता की मुख्य शिक्षा, निष्काम कर्मयोग का आदेश है। गीता स्वयं विभिन्न योगमार्गी का तुलनात्मक अध्ययन करके निष्काम कर्मयेाग की श्रेष्ठता को स्वीकार करती है।

निष्काम कर्म की महत्ता उतनी है जितनी कि लिखी ही नहीं जा सकती है।

आधुनिक युग में गीता के निष्काम कर्म की प्रासंगिकता:

आज हम जिस युग में साँस ले रहे हैं वो संघर्ष, स्वार्थ, छल, प्रतिस्पर्धा तथा किसी तरह अपने अस्तित्व को बचाये रखने का युग है। नैतिकता का पूर्ण ह्रास हो रहा है। साथ ही मानवीय संवेदनाओं और भावनाओं की भी कोई कीमत नहीं रह गई है। ईश्वर का अस्तित्व को मानते तो है परंतु अनास्था की साँस लेकर दुविधा ग्रस्त भी हैं। पूर्वजों के प्रति सम्मान तो है लेकिन नई पीढ़ी के आगे किं कर्त्तव्यविमूढ़ भी है। अनुशासन और नियमों की मान्यता समाप्त हो गई है। इन सब का मूल कारण हमारा अधार्मिक व अमर्यादित होना है। क्योंकि आज स्वार्थ-सिद्धि ही सबका परम धर्म हैं।

गीता में श्री कृष्ण ने कहा है - ''कर्मों का सन्यास और निष्काम कर्मयोग'' यह दोनों ही परम कल्याणकारी है। वर्त्तमान परिस्थिति में कृष्ण का यह वाक्यांश हथियार पर खड़ा है क्योंकि आधुनिक मनुष्य अपने अधिकार के लिए हावी होता चला जा रहा है ताकि वह अपने कर्त्तव्यों से विमुख होकर भी फल की प्राप्ति कर सके। बिना फल के कर्म, यह शब्द ही वर्त्तमान हालत में संदेहात्मक हैं। जिन लोगों ने निष्काम कर्म के भाव को समझना तथा उसके आंगिक रूप में आत्मसात करने की कोशिश की ऐसे लोगों में राधाकृष्णन् और लोकमान्य तिलक आते हैं।

निष्काम कर्म फल में फल के त्याग का संदेश देता है। निष्काम कर्म की बातें करना अप्रासंगिक है, अर्थहीन है, मगर यदि देखा जाय तो आज के युग में यह अत्यंत प्रासंगिक प्रतीत होता है। आज कर्त्तव्य परायणता काम को सही ढ़ंग से करना निजि कम्पनियों में काम को सर्वोपरि मानते थे बल्कि कहा जाय तो जीवन के हर क्षेत्र में सफलता के लिए कर्म ही प्रधान माना जाता है। गीता का संदेश व्यक्ति को कर्मण्य बनाता है, जो आज के युग में चारो ओर दिख रहा है। मगर समस्या केवल यह है कि व्यक्ति का लालच कर्म की शुद्धता को दूषित कर देता है। यदि प्रत्येक व्यक्ति कर्म को कर्त्तव्य समझकर करें तो समाज का एक अत्यंत सुंदर रूप स्थापित हो सकता है। जिस प्रकार हमारी सेना केवल कर्त्तव्य से ही प्रेरित होकर दुश्मनों से युद्ध करने में अपनी जान की बाजी लगाती है। उसी प्रकार यदि हम सभी कर्म करना आरंभ कर दें तो विश्व का रूप ही बदल जाएगा।

निष्कर्ष :

इस शोध कार्य के उपरान्त हम इस निष्कर्ष पर आते हैं कि वर्त्तमान युग में गीता के आदेश का अत्यधिक महत्त्व है। आज के मानव के सामने अनेक समस्याएँ हैं। इन समस्याओं का निराकरण गीता के अध्ययन से प्राप्त हो सकता है। अत: आधुनिक युग में मानवों को गीता से प्रेरणा लेनी चाहिए। गीता में केवल धार्मिक विचार ही नहीं बल्कि दार्शनिक विचार भी भरे हैं। कर्मयोग को गीता का सबसे महत्त्वपूर्ण अंग माना गया है। भगवान श्रीकृष्ण ने गीता में अर्जुन को कर्मयोग का ही उपदेश दिया है। निष्काम कर्म की शिक्षा गीता की अनमोल देन कही जाती हैं गीता में ज्ञान, कर्म और भक्ति का अनुपम समन्वय है। आधुनिक युग में कर्म की प्रधानता देखने को मिलती है। साथ ही साथ ईश्वर भक्ति में भी लोग लिप्त रहते हैं। मगर जहाँ तक ज्ञान की बात है, वहाँ उचित ज्ञान का सर्वथा अभाव देखने को मिलता है। गीता में ज्ञान से तात्पर्य है विवेक-ज्ञान अर्थात् वह ज्ञान जो व्यक्ति को वर्त्तमान युग में व्यक्ति अज्ञानवश अयथार्थ को यथार्थमान बैठता है। नश्वर वस्तुओं को सत्य मान लेता है। यही कारण है कि वह किसी भी प्रकार के अनुचित कर्म को करने के लिए भी तत्पर रहता है। ताकि उस धन और सुख की प्राप्ति हो सके। गीता के उपदेश के अनुसार उचित ज्ञान होना आवश्यक है परन्तु जो नश्वर है अथवा अयथार्थ है उसके पीछे भागना तथा उसके लिए अनुचित कर्म करना यह गीता का संदेश नहीं है। गीता के उपदेश के अनुसार उचित ज्ञान जब तक कर्म एवं भक्ति के साथ नहीं जुड़ता है तब तक व्यक्ति एवं समाज का भला संभव नहीं है। अत: आज के युग में गीता का ज्ञान, भक्ति और कर्म का समन्वय भी परम आवश्यक है।

सुझाव :

निष्काम कर्म के द्वारा ही संसार की गति जारी रह सकती है।

प्रत्येक व्यक्ति को संसार की गति जारी रखने में अपना पूर्ण योगदान देना चाहिए।

चूँकि वासना, कामना अथवा आसक्ति कर्त्ता को बंधन में बाँधता है, अत: इसे जीवन से निकाल देना आवश्यक है।

नैतिक एवं उचित कर्म से ही संसार में सुख, शांति एवं समृद्धि स्थापित हो सकती है।

मानवीय सभ्यता एवं संस्कृति के विकास में भी निष्काम कर्म का महत्त्वपूर्ण योगदान है।

ग्रंथ सूची-*(References) :*

राधा कृष्णन डॉ० (2014). भारतीय दर्शन भाग-1 राजपाल दिल्ली एण्ड सन्स।

सिन्हा प्रो० हरेन्द्र प्रसाद (1998). धर्म दर्शन की रूप रेखा दिल्ली, मोतीलाल बनारसी दास।

सिंह बी० एन० डॉ० (1993). भारतीय दर्शन हिन्दु विश्वविद्यालय मार्ग लंका, वाराणसी।

वात्स्यायन आचार्य रामचन्द्र (2011). श्रीमद् भगवद्गीता में जीवन-दर्शन आकुर्ली रोड, कांदिवली, पुर्व मुंबई।

वर्मा अशोक कुमार (2009). नीतिशास्त्र की रूपरेखा, दिल्ली, मोतीलाल बनारसी दास।